यह प्रश्न-पत्र एवं उत्तर पुस्तिका संयुक्त है।

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु राम

# श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

## जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा-2022

समय : 3 घण्टे
12:30 से 3:30 बजे तक

**प्रश्न-उत्तर पत्र भाग - 11 तत्व**

अंक 100

नाम..... पिता/पति का नाम.....

शहर का नाम..... जन्मतिथि..... मोबाइल..... रोल नं .....

**नोटः-सभी प्रश्नों के उत्तर दिये गये निर्देशों के अनुसार, निर्धारित स्थान पर, इसी प्रश्न पत्र में लिखें। उत्तर पुस्तिका जाँचने पर यदि यह पुष्टि होती है कि परीक्षार्थी ने दूसरे का सहयोग लिया है अथवा एकाधिक पुस्तिकाओं के उत्तर समान हैं तो उसे नकल किया हुआ मानकर परिणाम निरस्त कर दिया जावेगा। केन्द्र अधीक्षक उपरोक्त प्रश्नोत्तर पुस्तिका परीक्षा समाप्ति के अगले दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) के पते पर भिजवावें।**

---

### जीव धड़ा

**प्रश्न 1. अंकों में उत्तर दीजिए -** **10**

1. क्षायिक सम्यक्दृष्टि कितने गति के जीवों में पायी जाती है।
2. कल्पातीत देवों के अपर्याप्त व पर्याप्त मिलाकर कुल कितने भेद है।
3. अन्तर्द्वीपज मनुष्यों में सम्मूर्च्छिम मनुष्य के कितने भेद है।
4. एकान्त सम्यग् दृष्टि के भेदों में कितने भेद मिलने से एक दृष्टि के भेद बनते है?
5. शुक्ल लेश्या में देव के कितने भेद पाए जाते है?
6. महाविदेह क्षेत्र में कितने चारित्र पाए जाते है?
7. अभाषक में तिर्यंच में कितने भेद पाए जाते हैं?
8. उपशम समकित में अपर्याप्त नैरयिक के कितने भेद पाए जाते हैं?
9. गर्भज से नो गर्भज में जीव के कितने भेद अधिक पाए जाते है?
10. असंज्ञी में पाए जाने वाले जीवों के भेद में कितने भेद संज्ञी में भी पाए जाते हैं?

**प्रश्न 2 जोड़ी मिलाइए –** **5**

| | |
|---|---|
| 1. शाश्वत | (अ). 283 |
| 2. अनाहारक | (ब). 193 |
| 3. ज्ञानी | (स). 250 |
| 4. श्रोतेन्द्रिय के अलद्धिये में | (द). 247 |
| 5. वैक्रियकाय योग | (क). 128 |
| 6. नपुंसक वेद | (ख). 347 |
| 7. अवधि दर्शन | (ग). 43 |
| 8. वचन योगी | (घ).220 |
| 9. देवी | (च).207 |
| 10. सास्वादन समकित | (छ). 233 |

**प्र.3 निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिए –** **10**

1. सेवार्त्त संहनन में जीव के 179 भेद पाए जाते हैं पर हुण्ड संस्थान में जीव के 193 भेद पाए जाते हैं। हुण्ड संस्थान में किन जीवों के कितने भेद बढ़े हैं? कारण बताइए?

.....

.....

2. जीव के 563 भेदों में कितने भेद वाले जीव भाषक और अभाषक दोनों होते हैं? क्यों? कारण बताईए?

.....

.....

3. एकान्त कृष्णलेशी में जीव के 4 भेद और एकान्त नीललेशी में जीव के 2 भेद ही पाए जाते हैं? कारण स्पष्ट करें?

.....

.....

4. एकान्त पुरुष वेद में जीव के कितने भेद पाए जाते है? उनमें किन जीवों के भेद मिलाने से एक वेद में पाए जाने वाले भेदों की संख्या आती है? वह संख्या कितनी है?

.....

.....

5. किस समुद्र में जीवो की संख्या सबसे अधिक पायी जाती है? उस समुद्र में किन जीवों के कितने भेद पाए जाते हैं? समुद्र में पाए जाने वाले जीवों की कुल संख्या भी लिखे?

.....

.....

## बंध, उदय, उदीरणा सत्ता का थोकड़ा 40 अंक

**प्र.4 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –** **10**

1. आत्मा के मिथ्यात्व आदि शुभाशुभ परिणामों को ..... कर्म कहते है?
2. जीवों के शुभाशुभ अध्यवसाय ..... है।
3. जीव..... प्रदेश वाले कार्मण स्कन्ध को ग्रहण करता है।
4. जिस निद्रा में आत्मशक्ति एकत्रित हो जाती है, उस निद्रा को..... कहते है?
5. जिससे संसार की वृद्धि हो वह ..... है।
6. जो सीधा जीव में ही अपना फल देती है वे ..... विपाकी प्रकृतियाँ है।
7. किसी भी प्रकृति के विपाक और प्रदेश दोनों प्रकार के उदय से रहित अवस्था ..... है।
8. आकाश प्रदेशों की ..... के अनुसार ही जीव की गति होती है।
9. अनंतानुबंधी को सत्ता से रहित करना ..... है।
10. जिस कर्म के उदय से घृणा पैदा हो उसे ..... मोहनीय कर्म कहते हैं।

**प्र.5 निम्न की परिभाषाएं लिखे –** **5**

1. उदीरणा किसे कहते हैं?

.....

2. अचक्षुदर्शनावरणीय कर्म किसे कहते है?

.....

3. अपवर्त्तनीय आयु किसे कहते हैं?

.....

4. क्षायिक सम्यक्त्व किसे कहते है?

.....

5. मिथ्यादर्शन किसे कहते है?

.....

**प्रश्न 6. निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिए–** **20**

1. अचरम शरीरी क्षायिक समकिती जीव के अप्रमत संयत जीवस्थान (गुणस्थान) में कितनी प्रकृतियों की सत्ता रहती है? जिन प्रकृतियों की सत्ता नहीं रहती है, उनका नाम लिखें?

.....

.....

.....

2. क्या अनंतानुबंधी कषाय के उदय के अभाव में अनंतानुबंधी का बंध होता है? कारण स्पष्ट करे ?

.....

.....

.....

3. मनुष्यायु का बंध, उदय, उदीरणा और सत्ता किन जीव स्थानों(गुण स्थानों) में है?

.....

.....

.....

4. चौथे जीवस्थान (गुणस्थान) में जीव प्रथम जीवस्थान (गुणस्थान) में जाता है तो कितनी प्रकृतियों का बंध बढ़ जाता है? वे प्रकृतियाँ कौन सी है? उनका नाम लिखे?

.....

.....

.....

5. क्षपक श्रेणी वाले जीव के सातवें जीवस्थान (गुणस्थान) के अंतिम समय में किन प्रकृति का उदय विच्छेद होता है? प्रकृति का नाम लिखे?

.....

.....

.....

6. किस जीव स्थान(गुण स्थान) वर्ती संयत के स्त्यानर्द्धित्रिक का उदय संभव है? कारण स्पष्ट करें?

.....

.....

.....

7. नो कषाय मोहनीय की ऐसी कौन सी प्रकृति है जिसका बंध विच्छेद, उदय विच्छेद, उदीरणा विच्छेद और सत्ता विच्छेद नवें जीवस्थान (गुणस्थान) में होती है?

.....

.....

.....

8. किस आयु की सत्ता वाला जीव श्रेणी आरोहण नहीं करते हैं? सिद्धांत मतानुसार एक भव में जीव कौन-कौन सी श्रेणी आरोहण करता है।

.....

.....

.....

9. प्रथम जीवस्थान (गुणस्थान) में अनुदयवती कौन सी प्रकृति है? उनमें से किन प्रकृतियों का उदय छठे जीवस्थान (गुणस्थान) में नहीं रहता है?

.....

.....

.....

10. आतप नाम कर्म का उदय किन जीवों से होता है? इसका बंध विच्छेद किस जीवस्थान (गुणस्थान) में होती है?

.....

.....

.....

**प्रश्न 7. तेरहवें जीवस्थान (गुणस्थान) में कितनी प्रकृतियों का उदय विच्छेद होता है? उन प्रकृतियों के नाम लिखे? उन प्रकृतियों में कितनी और कौन सी प्रकृतियों का बंध विच्छेद आठवें जीव स्थान (गुणस्थान) के छठे भाग में होता है। 2.5**

.....

.....

.....

**प्रश्न 8 निम्न का उत्तर दें – 2.5**

1. तीसरे गुणस्थान में अबंध योग्य प्रकृतियाँ

.....

2. छठे गुणस्थान में उदय विच्छेद वाली प्रकृतियाँ

.....

3. प्रत्याख्यानावरण चतुष्क का सत्ता विच्छेद गुणस्थान

.....

4. उच्च गोत्र उदय विच्छेद गुणस्थान

.....

5. साता वेदनीय उदीरणा विच्छेद गुणस्थान

.....

## जीव पर्याय

**प्रश्न 9 सही विकल्प बताए –** **10**

1. एक केवल ज्ञानी मनुष्य की स्थिति क्रोड़पूर्व है और दूसरे केवलज्ञानी मनुष्य की स्थिति क्रोड़पूर्व में 15 समय कम है। कौन सा स्थान पतित है?

(अ) संख्यात गुणा (ब) असंख्यात गुणा (स) असंख्यातवाँ भाग (द) संख्यातवाँ भाग ( )

2. उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञान वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय कौनसी स्थिति वाला नहीं होता है?

(अ) अन्तर्मुहूर्त (ब) 500 पूर्व वर्ष (स) 3 पल्योपम (द) पल का असं. भाग ( )

3. जघन्य अवगाहना वाला पृथ्वीकाय, जघन्य अवगाहना वाले पृथ्वीकाय से स्थिति की अपेक्षा कितने स्थान पतित हो सकता है?

(अ) षट्स्थान (ब) त्रिस्थान (स) चतुःस्थान (द) कोई भी नहीं( )

4. उत्कृष्ट स्थिति वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय में कितने उपयोग पाए जा सकते है –

(अ) 9 (ब) 6 (स) 4 (द) 5 ( )

5. उत्कृष्ट श्रुतज्ञान वाला बेइन्द्रिय उत्कृष्ट श्रुतज्ञान वाले बेइन्द्रिय से आभिनिबोधिक ज्ञान की अपेक्षा कितने स्थान पतित हो सकता है।

(अ) त्रिस्थान (ब) द्विस्थान (स) चतुःस्थान (द) षट्स्थान ( )

6. जघन्य चक्षुदर्शन वाला दस हजार वर्ष की स्थिति वाला नैरयिक जघन्य चक्षुदर्शन वाला 33 सागरोपम की स्थिति वाले नैरयिक से स्थिति की अपेक्षा कौन सा स्थान हीनाधिक होगा?

(अ) संख्यात गुणा (ब) संख्यातवाँ भाग (स) असंख्यातवाँ भाग (द) असंख्यात गुणा ( )

7. उत्कृष्ट अवागाहना वाला मनुष्य उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्य से स्थिति की अपेक्षा कितने स्थान पतित होता है?

(अ) द्विस्थान (ब) एक स्थान (स) तुल्य (द) चतुःस्थान ( )

8. 10 वर्ष वाले तेइन्द्रिय की 12 वर्ष वाले तेइन्द्रिय से तुलना करे तो कौन सा भाग हीनाधिक घटित होता है।

(अ) संख्यातवाँ भाग (ब) असंख्यातवाँ भाग (स) संख्यात गुणा (द) कोई नहीं ( )

9. जीव पर्याय में चउरिन्द्रिय के कुल कितने आलापक होते हैं।

(अ) 81 (ब) 75 (स) 84 (द) 28x3 ( )

10. मध्यम अवगाहना वाला ज्योतिषी देव मध्यम अवगाहना वाले ज्योतिषी देव से अवगाहना की अपेक्षा कितने स्थान पतित हो सकता है?

(अ) एक स्थान (ब) द्विस्थान (स) चतुस्थान (द) त्रिस्थान ( )

**प्रश्न 10. हाँ/ ना में उत्तर दीजिए –** **10**

1. जघन्य अवगाहना वाला ज्योतिषी देव जघन्य अवगाहना वाले ज्योतिषी देव से स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थान पतित होता है। ( )

2. जघन्य गुण काले वर्ण वाले तेइन्द्रिय में तीन उपयोग पाए जाते हैं। ( )

3. उत्कृष्ट अवधिज्ञानी मनुष्य की अवगाहना चतु:स्थान पतित होती है। ( )

4. जिन देवों की अवगाहना चतु:स्थान पतित होती है उन देवों के अवगाहना की अपेक्षा 33 आलापक होते है। ( )

5. जघन्य अवधिदर्शन वाले मनुष्य का अवधिज्ञान षट्स्थान पतित होता है। ( )

6. जघन्य स्थिति वाले चउरिन्द्रिय अवगाहना की अपेक्षा चतु:स्थान पतित हो सकते है। ( )

7. केवल ज्ञानी मनुष्य केवल दर्शन की अपेक्षा षट्स्थान पतित होता है। ( )

8. उत्कृष्ट चक्षुदर्शन वाला मनुष्य स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थान पतित होता है। ( )

9. उत्कृष्ट अचक्षुदर्शन वाले तिर्यंच पंचे की उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम की होती है। ( )

10. जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञान वाले मन:पर्ययज्ञानी अवगाहना से त्रिस्थान पतित होते है। ( )

**प्रश्न 11 निम्न प्रश्नों का उत्तर संक्षेप में दिजीए –** **5**

1. उत्कृष्ट अवगाहना वाले स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय में कितने उपयोग पाए जाते है?

.....

.....

2. जघन्य अवगाहना वाला मनुष्य अगर जघन्यस्थिति वाला हो तो उसमें कौन–सा उपयोग पाया जाता है?

.....

.....

3. कर्मभूमि का मनुष्य स्थिति की अपेक्षा कितने स्थान पतित होता हैं?

.....

.....

4. उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्य में कितने उपयोग पाए जाते हैं?

.....

.....

5. जघन्य स्थिति वाले दो तिर्यंच पंचेन्द्रिय की तुलना द्रव्य प्रदेश अवगाहना, स्थिति, वर्णादि और उपयोग की अपेक्षा करें।

.....

.....

**प्रश्न 12. निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिए –** **10**

1. 500 धनुष की अवगाहना वाले नैरयिक स्थिति की अपेक्षा कितने स्थान हीनाधिक होते है? स्थानो को उदाहरण देकर स्पष्ट करें?

.....

.....

.....

2. एक भवनपति देव की स्थिति 20000 वर्ष है तथा दूसरे की एक सागरोपम की है ये कौन से भवनपति देव है? स्थिति की अपेक्षा कौन सा स्थान हीनाधिक है?

.....

.....

.....

3 जघन्य अवगाहना वाले बेइन्द्रिय 5 उपयोग की अपेक्षा षट्स्थान पतित है परन्तु जघन्य स्थिति वाले बेइन्द्रिय 3 उपयोग की अपेक्षा षट्स्थान पतित होते है–कारण स्पष्ट करें?

.....

.....

.....

4. उत्कृष्ट अवधि ज्ञान वाला तिर्यंच पंचेन्द्रिय अवगाहना व स्थिति की अपेक्षा कितने स्थान पतित होता है? उनमें कितने उपयोग पाए जाते है? उपयोग की अपेक्षा उनकी तुलना करें?

.....

.....

.....

5. जीव पर्याय संख्यात है या असंख्यात है या अनंत? कारण बताएं।

.....

.....

.....